|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 25. April | | |
| **Fest des heiligen Evangelisten Markus** | | |
| Lesung: 1 Petr 5,5b-14; Evangelium: Mk 16,15-20 | | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht vom wahren Licht |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 151 | Herr, erbarme dich unser |
|  | GL 163, 5 | Herr Jesus, auferstanden von den Toten |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir, Gott im Himmel Preis und Ehr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 89, 2-3.6-7.16-17 |  |
|  | Kehrvers: GL 401 | Lobet den Herrn |
|  | GL 81, 1+4+5 | Lobet den Herren, alle, die ihn ehren |
|  | GL 415 (Kanon) | Vom Aufgang der Sonne |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 174, 8 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Wir verkünden Christus als den Gekreuzigten:* | |
|  | *Gottes Kraft und Gottes Weisheit.* | |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 325, 1-3 | Bleibe bei uns |
|  | GL 484, 1+3-5 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 331, 1-3 | Ist das der Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 328, 1+2+5+6 | Gelobt sei Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes |